प्रातः क्लास 29/10/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप बैठ समझाते हैं। तुम बच्चे यहाँ आये हुए हो राजयोग सीखने। गीता है ही सहज राजयोग सीखने का पुस्तक। अभी तुम बच्चों में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार है। जिनकी बुद्धि में यह आता है कि बरोबर यह तो बड़ी भारी भूल हुई है भारत के विद्वानों आदि की जो भगवान को नहीं जानते। गीता का भगवान कौन है, और गीता किस धर्म का शास्त्र है, वह धर्म किसने स्थापन किया यह जानते ही नहीं। जरूर एक ही होगा जिसने गीता का आदि सनातन देवी देवता धर्म स्थापन किया है और बड़े ते बड़े भूल भी इस शास्त्र में ही है। बड़े2 विद्वान आचार्य आदि सभी शास्त्रों पर ही आधार रखते हैं। उसमें भी एक तो है सन्यासी जिनका प्रभाव जास्ती है। वह तो है ही निवृत्ति मार्ग वाले। उनको दूसरे धर्म का पता हो नहीं सकता। हरेक को अपने2 धर्म का पता होता है। अभी बाप आकर समझाते हैं सहज राजयोग मैंने ही तुमको सिखाया था और संगमयुग पर ही सिखाया था। अभी तुम समझते हो गीता जो हम पढ़ते थे वह तो बिल्कुल झूठी है; क्योंकि नाम ही गलत है। बाप भगवान के बदली नाम उसका रखा हुआ है जो पूरे 84 जन्म लेते हैं। यह तो सभी धर्म वाले जानते हैं कि गीता सर्वोत्तम शास्त्र है आदि सनातन देवी देवता धर्म का। स्वर्ग हेविन स्थापना का धर्म शास्त्र है गीता। भगवान की गाई हुई गीता है ना। भगवान अलग है, देवताएँ अलग हैं, मनुष्य अलग हैं। अभी जब कि पुरुषोत्तम संगमयुग है, श्रीकृष्ण तो अपने बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में ही होगा। पहले सतयुग में था अभी कलियुग में कहेंगे। पुनर्जन्म जरूर लिये होंगे। 84 जन्मों में आ गया फिर वह कैसे गीता सुनावेंगे। उसने तो आगे जन्म में यह नालेज सुनकर दूसरे जन्म अर्थात् सतयुग में कृष्ण पद पाया। वह फिर गीता कैसे सुनावेगा। तो यह है बड़ी भारी भूल। अभी तुम बच्चों को एलान निकालना पड़े, जो बुजुर्ग सयाने बच्चे हैं जिन्होंने गीता का अच्छा अभ्यास किया है। इस जन्म की बात है। तुम जानते हो देवी देवता धर्म की स्थापना अभी हो रही है, हम देवता बन रहे हैं। वह तो झूठ बतलाते हैं कि कृष्ण भगवानुवाच। बात तो बड़ी सहज है; परन्तु बच्चों में इतना बल नहीं है जो चैलेंज कर सके। जो भी बड़े2 शास्त्रों के आचार्य हैं किसको पता नहीं है। श्रीकृष्ण को कब कोई पतित पावन कह नहीं सकते हैं। अभी तुम बच्चों को कितनी अच्छी रीत समझ मिलती है। बड़े2 महारथी, बड़े2 म्युजियम आदि खोल निमंत्रण दे समझाते हैं; परन्तु यह सवाल कोई से डायरेक्ट पूछो; क्योंकि यह ही जबरदस्त भूल हुई है। इन पर ध्यान खैंचवाने की भी ताकत न रही है। बात है बड़ी सहज। गीता का भगवान कृष्ण को नहीं कहा जा सकता। भगवान तो भगवान को ही कहा जाता है जो कि निराकार है। उनका नाम है शिव। नाम शिव कहते भी हैं। तो नाम–रूप से न्यारा कैसे कहेंगे। ऐसी भूल तो कोई अनारी भी कर न सके; परन्तु तुम बच्चे ऐसे चैलेंज देते नहीं हो। न कोई ताकत रखते हैं। जो कोई से भी जाकर पूछो कि यह तो बताओ हम भगवान किसको कहें। भगवान तो एक होता है। वह है ही निराकारी शिव। बाकी तो सभी साकार देवी देवताएँ हैं। जिनको मनुष्य पूजते हैं। देवताओं को देवताएँ नहीं पूजते। मनुष्य पूजते हैं। शिव को पूजते हैं। अभी भगवान किसको कहें। मिस अन्डर स्टैन्डींग तो बहुत बड़ी है ना। ड्रामा अनुसार फिर भी यह भूल होगी। सारे विश्व में यह एकज भूल है। बाप कहते हैं जरी सी भूल है। भारतवासी अपने देवी देवता धर्म को ही नहीं जानते, पता नहीं है कि किसने स्थापन किया। और तो सभी को अपने2 धर्म का पता है; परन्तु यह बातें बड़े2 विद्वान, पंडित आदि2 कोई भी नहीं जानते कि भगवान किसको कहा जाता है। कृष्ण तो देहधारी है ना। उनको भगवान कह कैसे सकते। अभी तुम बच्चे समझते हो यह तो बहुत भारी भूल है। बाप तो कहते हैं मामेकम् याद करो। देह के सभी धर्म छोड़ अपन को आत्मा समझो। मुझ बाप को याद करो। यह ज्ञान तो तुमको और कहाँ से मिलता ही नहीं। आजकल सेवा के लिए स्त्रियों की सभाएँ भी बहुत होती रहती हैं; परन्तु क्या सेवा करनी चाहिए यह जानते ही नहीं। बाप ने समझाया है भारत के रहने वालों की ही कितनी दुर्गति हो गई है। भारत के लिए ही स्वर्ग और नर्क गाया जाता है; परन्तु यह कोई

को पता नहीं है। लम्बा चौड़ा गपोड़ा लगा दिया है। कल्प लाखों वर्षों का है। तो यह बातें बुद्धि में आनी चाहिए कैसे अपनी कानफ्रेन्स बुलाकर चैलेंज करे। तुम्हारी विजय इसमें ही होनी है। गीता का भगवान देवता श्री कृष्ण नहीं। भगवान एक है, वह है निराकार शिवबाबा। साकार को भगवान कह नहीं सकते हैं। देवी देवताएँ भी साकार मनुष्य ही है। यह मनुष्य सृष्टि है। इनको देवताओं की सृष्टि नहीं कहेंगे। सतयुग में देवी देवताएँ थे। उन्हों के चित्र भी हैं। सूर्यवंशी चन्द्रवंशी जो मुख्य चित्र है। जैसे आत्माओं का बाप मुख्य है। शिव का मंदिर भी मुख्य गिना जाता है। शालीग्रामों का मंदिर नहीं होता है। शिव एक है। फिर है देवताएँ। इसमें भी दो डिनायस्टी मुख्य है। क्रिश्चयन की भी डिनायस्टी थी। अभी तो डिनायस्टी है नहीं; क्योंकि कोई राजा रानी तो रहे नहीं हैं। रानी कोई प्रिन्स से शादी की हुई नहीं है। किंग है नहीं तो फिर उनको क्वीन कैसे कहेंगे। रायल फैमली से तो .... है नहीं। वह तो मिलिट्री कमान्डर का एक बच्चा था। उनका नसल कोई रायल घराणे का नहीं है। उनसे दिल लगी। तो वास्तव में उनको किंग कह नहीं सकते। जोड़ी तो पूरी होनी चाहिए। बाकी क्रिश्चयन धर्म के हैं। उसमें भी कोई रोमन, कोई कैथलिक होते हैं। रोमन कैथलिक से वा कैथलिक रोमन से शादी कर न सके। नहीं तो फिर धर्म बदलना पड़े। तो मूल बात है गीता जो तुम्हारा शास्त्र है वह भगवान ने सुनाई है। न कि देवता कृष्ण ने। यह चैलेंज देना चाहिए। कितनी भारी भूल तुम लोगों ने की है। भगवान तो है ही एक जिसका नाम है शिव। कृष्ण को तो देवता कहा जाता है। ब्रह्मा देवताएँ भी कह नहीं सकते हैं। ब्रह्मा देवता तो है नहीं। देवताओं में नम्बरवन है ल0ना0। ब्रह्मा को देवता नहीं कहा जा सकता। वह तो प्रजापिता है ना। इनके मुख वंशावली ब्राह्मण है। तो ब्रह्मा देवताएँ नमः कह नहीं सकते। विष्णु देवताएँ नमः कह सकते हैं। शंकर है नहीं। सूक्ष्मवतन में कोई चीज़ होती ही नहीं। वह तो सिर्फ सा0 है। आत्माएँ सभी मूलवतन में रहती हैं। जैसे ऊपर से सितारे इस माण्डवे के रोशनी लिए खड़े हैं। वैसे आत्माएँ भी वहाँ मूलवतन में जाये खड़ी रहती हैं। जैसे कि निराकारी झाड़ है। उस झाड़ से पहले देवी देवता धर्म की आत्मा आती है। झाड़ भी दिखाया है समझने लिए; परन्तु पहले2 यह भूल बतलानी है तो तुम्हारी विजय हो जावेगी। गीता के भगवान को तो और ही कोई नहीं जानते। बाप की कितनी टूमच निन्दा करते हैं। ऐसी ग्लानी तो कब किसकी नहीं हुई। हिन्दुओं ने अपने को चमाट मारी है। बाप की भी ग्लानी की है। बाप समझाते हैं तुम ही देवताएँ थे। फिर तुम ही अपने धर्म को भूल फिर देवताओं की बैठ ग्लानी करते हो, कृष्ण को इतनी रानियाँ थी, राम की सीता चुराई गई। बाप समझाते हैं तुम भी फील करते हो बरोबर यह बातें तो ठीक हैं। यह सभी क्यों हुआ है; क्योंकि गीता के भगवान को ही नहीं जानते। बाप को तो फिर भी जानते हैं कहते हैं शिवबाबा। मंदिर भी शिव का है। कृष्ण का मंदिर अलग है। अभी भगवान किसको कहा जाये। जरूर निराकार को ही कहेंगे। फिर गीता में कृष्ण को कैसे कह दिया है। तो यह ड्रामा का खेल बना बनाया है। फिर भी ऐसे ही होगा। अभी तो बाप समझाते हैं शिवबाबा को याद करो तो तुम पुण्यात्मा देवता बन जावेंगे। अभी आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना हो रही है। और सभी धर्म विनाश हो जावेंगे। गायन भी है ब्रह्मा द्वारा एक धर्म की स्थापना.....बाप समझाते हैं जो कुछ पास्ट हुआ वह ड्रामा में नूँध है। गीता की कितनी टीका की है। और वेद शास्त्र आदि उपनिषदों की इतनी टीका नहीं की है। जितनी गीता में की है। हाँ उन शास्त्रों में कुछ एडीशन करते गये हैं। जैसे नानक का ग्रन्थ कितना छोटा था। अभी तो कितना बड़ा हो गया है। गीता भी पहले छपाई के नहीं थे। तो बाप कितना सहज कर समझाते हैं। कल्प पहले भी तुमको समझाया था कि अपन को आत्मा समझो। मीठे2 बच्चों, सिकीलधे बच्चों 5000 वर्ष बाद आये मिले हुए बच्चों अपन को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। सन्यासी आदि ऐसे समझा न सके। वह तो आते ही हैं पीछे। वह सहजराजयोग को क्या जाने। भगवान की सुनाई हुई बात सन्यासी कैसे सुना सकते। बाप ही समझाते हैं बच्चे तुम अपन को आत्मा समझो। तुम मेरे बच्चे हो। तुम न देवताओं की, न मनुष्यों के बच्चे हो। तुम तो मेरे लाल हो। तुम अभी कितने तमोप्रधान हो गये हो। ड्रामा

अनुसार तुम लालों को 84 जन्म भोगना था वह अभी पूरे हुए। मैक्सीमम कह देते हैं। मिनिमम भी है। कल्प2 तुम बच्चों को ही आकर समझाता हूँ। अनेक बार समझाया है। फिर भी वन्डर है जो फिर तुम भूल जाते हो। अभी बाप समझाते हैं बच्चे भूलो मत। अपन को आत्मा समझो। कहते भी हैं हमारे अन्दर आत्मा है। मैं आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेता हूँ। हम आत्मा अविनाशी हैं। शरीर विनाशी है। बाकी 84 लाख जन्म सुनी है तो फिर कल्प की आयु भी बहुत बढ़ा दी है। बाप समझाते हैं यह सभी पुस्तक आदि भक्तिमार्ग के हैं। औरों की धर्म की स्थापना के जो भी शास्त्र हैं उनका नाम ठीक है। समय भी है। सभी कहते हैं इनको इतना समय हुआ। फलाना इस समय आया। बाकी सूर्यवंशी चन्द्रवंश डिनायस्टी अलग2 है। वह 16 कला सम्पूर्ण है। वह दो कला कम है। युग भी दो मिली है सतयुग और त्रेता। तो युगों की आयु एक ही होनी चाहिए। मुख्य बात है ही यह जो बाप समझाते हैं। सन्यासी विद्वान आचार्य आदि को समझानी है। यूँ तो ऐसे कोई नई बात होती है तो राजा के पास जाते हैं वह फरमान करते हैं तो सभी के पास पहुँच जाता है। यहाँ राजा तो कोई है नहीं। यह है ही प्रजा का प्रजा पर राज्य। यह भी ड्रामा में नूँध है। मैं भी ड्रामा अनुसार तुमको समझाता हूँ। इतना समय हो गया है इन मिस्टेक्स को क्यों नहीं समझाते हो। सन्यासी तो देवी देवता धर्म के हैं नहीं। उन्हों का कोई कनेक्शन है नहीं। वह है ही निवृत्ति मार्ग वाले। देवी देवता धर्म तो बहुत प्राचीन है। सन्यासियों को गीता का क्या पता। पराई शास्त्रों में घुस पड़े हैं। अभी उन्हों से फिर बैठकर गीता सुनना, गीता तो उन्हों से पहले की है ना जो फिर अनेक भाषाओं में ट्रान्सफर करते रहते हैं। संस्कृत जानते हैं तो फिर वह बैठ बनाते हैं। मैं थोड़े ही संस्कृत श्लोक आदि सुनाता हूँ। यह है बिल्कुल नई बात। पहली2 बात तो बाप कहते हैं बच्चों चैलेंज करो। विजय तो तुम बच्चों को पानी ही है। सभी तुम्हारे माथा झुकाने वाले हैं अगर समझ जाये तो। कितने बड़े2 साहूकार लोग हैं। जानसन के पास 35 लाख के सिर्फ एक कार है। बिल्कुल उसमें बचाव है तो गोली भी अन्दर जा न सके। गोली मारे या कुछ भी करे अन्दर गोली जा न सके; परन्तु ऐसे थोड़े ही मोटर में सदैव रहेंगे। जो बच जावेंगे। गोली तो कहाँ भी मार सकते हैं। देरी नहीं लगती है। गांधी बापू जी को भी देखो कैसे मार डाला। शिव को कोई गोली मारेंगे? कृष्ण को मारेंगे क्योंकि शरीर है ना। शिव तो बिन्दी है। देवताओं को वहाँ कोई मारते नहीं। हिंसा की बात होती ही नहीं। विवेक कहते हैं। यहाँ तो है सभी मनुष्य। मनुष्यों में मारा–मारी बहुत है। किसको भी छोड़ते नहीं हैं। बाप कहते यह सभी ड्रामा ऐसा ही बना हुआ है। वहाँ तो मारने की बात होती ही नहीं। आपे ही अपना टाइम पर आपे ही शरीर छोड़ बच्चा बना यह तो अच्छा है ना। यह सभी बातें तुम अभी सुनते हो। सर्वशास्त्रमई शिरोमणि गीता कहा जाता है। ऊँच ते ऊँच है भगवान। अभी भगवान किसको कहेंगे? भगवान तो है ही एक निराकार। कृष्ण भी देवता है। उनको भगवान कैसे कह सकते हैं। पत्थर भित्तर को भी भगवान कह देते हैं। बाप जानते हैं तुम्हारी विजय आखरीन जरूर होनी है। बड़े2 विद्वान आदि को तुमको समझाना है। समझेंगे जरूर। बहुत आते रहेंगे। जब कि तुम समझते हो तो वह क्यों नहीं समझेंगे। इस समय नहीं समझते हैं; क्योंकि उन्हों की बड़ी राजाई है। जैसे राजाएँ होते हैं एक एक राजा को लाखों प्रजा होती है। वैसे एक एक गुरु हैं कितने लाखों के अन्दाज में उन्हों के शिष्य हैं। आगा खाँ को देखो कितनी उनकी इज्जत मिलती है। हीरों में वजन कर, हीरे उनको दान में दिये हैं। अन्धश्रद्धा देखो कितनी है। अभी सन्यासी तो है ही निवृत्ति मार्ग वाले। उनको फिर गुरु क्यों बनाते। बड़े2 घर के राजाएँ आदि भी सन्यास धारण करते हैं। समझते हैं घड़ी2 खिट2 से तो जंगल में निकल जावें यह अच्छा है। यह भी बन्धन है। सतयुग में कुछ भी बन्धन है क्या। कायदे अनुसार एक बच्चा एक बच्ची होती है। बन्धन की बात ही नहीं। बन्धन अक्षर दुख का है। वहाँ सतयुग में होता ही है सम्बन्ध। यहाँ है बन्धन। बाप आकर बन्धनों से मुक्त कर सम्बन्ध में ले जाते हैं। सम्बन्ध है सुख का, बन्धन है दुख का। बाप फिर भी समझाते हैं गीता के भगवान के लिए आपस में राय करो। कानफ्रेन्स तो होती रहती है। इसमें पूछो, यह तो बताओ सर्वशास्त्रमई श्रीमत भगवद्गीता किसने सुनाई? देवी–देवता धर्म की स्थापना किसने की? राजयोग किसने

सिखाया? सन्यासी लोग आपस में शास्त्रार्थ बहुत करते रहते हैं। खास बनारस में उन्हों का स्थान है जहाँ सभी आकर शास्त्रार्थ करते हैं। फिर कोई जीत पावे न पावे। फिर एक एक को 21 रुपये देते हैं। बड़े ही ठाट से उन्हों की सवारी निकलती हैं। खजाना साथ में रहता है। आजकल तो सन्यासी देखो पायलट बन एरोप्लैन चलाते रहते हैं। फालोअर्स लाखों हैं। यह सभी है अन्धश्रद्धा। तमोप्रधान बनने से कायदे आपस में खत्म हो गये हैं। तो बाप समझाते हैं यह सभी ड्रामा अनुसार तमोप्रधान बुद्धि, तो उन्हों का क्या हाल होगा। नहीं तो सन्यासियों को एरोप्लैन में चढ़ने की क्या दरकार है। प्राचीन ऋषि–मुनि आदि तो जंगल में रहते थे। पिछाड़ी वाले और ही साहुकार हो गये हैं।

तो मूल बात यह दिल में रखो तुम्हारी विजय किसमें होगी, कैसे होगी, जबकि इन्हों को समझाओ। इन पर जीत पहनो। इन्हों की अभी है राजाई। लाखों करोड़ों फालोअर्स हैं। राजाएँ तो नैचरल साहुकार हैं। यह तो फिर इन्हों को मिलता है। तो बच्चों को यह विचार करना है कानफ्रेन्स जल्दी2 होती है वहाँ जाकर इस बात को उठावे। कोई माता खड़ी हो तो है अच्छा; परन्तु ऐसा कोई में दम देखने में नहीं आता है। इतना जल्दी वह हार मान ले तो हथियार आदि सभी छोड़ दे। एक राजा ने हराया तो बाकी प्रजा कहाँ जावेगी। रिवोल्यूशन हो जाये। थरथला मच जाये। जिन ब्रह्माकुमारियों को इतनी गालियाँ मिलती थी। आज उन्हों की विजय हो गई। जैसे शिवबाबा को गाली मिलती है फिर कहेंगे अरे, वह तो भगवान है। हम मुफ्त में गाली देते थे। यह सभी होना है। तुम अभी देहीअभिमानी बनो। अजन तो अभी बाप को ही याद नहीं कर सकते हैं। जिससे विकर्म विनाश हो। योग का जौहर बड़ा अच्छा चाहिए। तलवार में जौहर होता है ना। वह तलवार बहुत तीखें होते हैं। वही तलवार 10 रुपये की, वही तलवार हजार में देते थे। अमेरिकन लोग तो पुरानी चीज़ बहुत खरीद करते हैं। (हिस्ट्री सुनाना) 300 की चीज 1500 में बेच देते थे। अभी तो तुम बच्चे जानते हो जिनके पास बहुत धन–दौलत है सभी मिट्टी में मिल जानी है। बाप तो नालेजफुल है उनका नाम ही बदनाम कर दिया है। जीत तुम्हारी इसमें ही होनी है। कल्प2 तुम जीत पहनते हो। चक्र तो जरूर फिरना ही है। सतयुग आना ही है। विनाश सामने खड़ा है। यह भी तुम बच्चे ही जानते हो। भारत में खून की नदी बहेगी। तब तो फिर घी की नदी बहेगी। यवनों और हिन्दुओं की लड़ाई है। तुम बच्चों ने देखा ना कितने बेइज्जत से मारते हैं। तुम बच्चों को तो बहुत नशा रहना चाहिए। तुम्हारे आगे ही वह सभी झुकते हैं। बाकी ऐसे नहीं कि तुमने कोई बाण मारे और वह मर गये। वह सभी हैं गपोड़े। तो यह सभी समझ की बात है। ड्रामा अनुसार तुम चल रहे हो। शिवबाबा को कोई फिकरात नहीं। साथ में रहने वाले दादा को भी कोई फिकरात नहीं। बापदादा दोनों पुरुषार्थ कराते रहते हैं। ख्याल करो, ऐसा क्या करें। कैसे समझावें कि यह एकदम सफेद झूठ बोलते हैं। भगवान को तो तुमने ठिक्कर भित्तर में डाल दिया है। एक भगवान की कितनी बेइज्जत की है। तब बाप कहते हैं यदा यदा हि.....बाप तो क्लीयर बतलाते हैं। तुम मुझ बाप को इतनी गाली देते हो। मेरी कितनी ग्लानी की है। मैं तुम्हारा उपकार करता हूँ। तुमने हमारा कितना अपकार किया है। तुम बच्चे जानते हो जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना ही ऊँच पद पावेंगे। बाप आये ही हैं हम सभी को ले जाने। और कोई भी गुरु आदि साथ में नहीं ले जाते हैं। खुद चले जाते हैं। शिष्य रह जाते हैं। फिर उनको दूसरा तीसरा गुरु करना पड़ता है। पति की स्त्री कब दूसरी शादी नहीं करती है। गुरुओं के शिष्य कितने शादी करते हैं। एक गुरु छोड़ा दूसरा लिया। जो मिला उन से दिल लग गई। अभी बड़ा सद्गुरु मिला तो फिर और सभी को छोड़ देना पड़ता है। बाप भी मिल गया। यह भी सिर्फ तुम ही जानते हो। बाप राजयोग भी सिखाते हैं। फिर साथ में भी ले जाते हैं। कृष्ण को तो पुनर्जन्म लेना पड़ता है। अच्छा मीठे2 रूहानी सिकीलधे बच्चों को रूहानी बापदादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।